प्रीलिम्स फैक्ट्स: 22 जून, 2019

- कोरिंगा मैन्ग्रोव
- कुटियाट्टम
- वाशी पेपर/कागज़

कोरिंगा मैन्ग्रोव

(Coringa Wildlife)

सरकार ने **कोरिंगा वन्यजीव अभयारण्य (Coringa Wildlife Sanctuary)** को यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल का दर्जा दिलवाने की प्रक्रिया शुरू कर दी है।

- एक बार यह दर्जा प्राप्त होने के बाद यूनेस्को यहाँ पर्यटन उद्योग को विकसित करने और वन्य जीवों को संरक्षित करने में मदद करेगा।
- पर्यावरण, वन, विज्ञान और प्रौद्योगिकी (The Environment, Forests, Science and Technology-EFS&T) विभाग ने इस संदर्भ में सभी मापदंडों को पूरा करने के लिये एक सात सदस्यीय समिति का गठन किया है।
- इस वन्यजीव अभयारण्य में पक्षियों की कुल 120 प्रजातियाँ पाई जाती हैं जिनमें बगुला, राजहंस और तीतर आदि प्रमुख हैं।
- इसके अतिरिक्त यहाँ पर सुनहरा सियार, समुद्री कछुआ और ऊदबिलाव भी पाए जाते हैं।
- बड़ी मात्रा में खाद्य सामग्री उपलब्ध होने के कारण इस अभयारण्य में पक्षियों की विविधता पाई जाती है।
- इस वन्य अभयारण्य की महत्त्वता का अंदाज़ा इसी बात से लगाया जा सकता है कि इसमें विलुप्त होने की कगार पर खड़ी कुछ प्रजातियाँ जैसे - लंबी चोंच वाला गिद्ध और सफ़ेद इबिस आदि भी पाई जाती हैं।

कोरिंगा वन्यजीव अभयारण्य

- **कोरिंगा वन्यजीव अभयारण्य** आंध्रप्रदेश के काकीनाडा के समीप स्थित है।
- यह भारत में पश्चिम बंगाल के सुंदरवन डेल्टा के बाद देश का दूसरा सबसे बड़ा मैंग्रोव वन क्षेत्र है।
- इस **अभयारण्य** में पक्षियों की 120 से अधिक प्रजातियाँ पाई जाती हैं।
- इस **अभयारण्य** का कुल क्षेत्रफल 235. 70 वर्ग किमी. है।

कुटियाट्टम (Kutiyattam)

हाल ही में दिल्ली के जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में कपिला वेणु ने 'पार्वती विरहम' का किरदार निभाया। पार्वती विरहम सदियों पुराने कुटियाट्टम नामक नाटक संग्रह का एक भाग है।

- कुटियाट्टम केरल के सबसे पुराने पारंपरिक थिएटर में से एक है जो संस्कृत परंपराओं पर आधारित है।

//

- यह मलयालम भाषा में ‘कुटी’ शब्द से बना है जसिका अर्थ है ‘संयुक्त’ या ‘एक साथ’ एवं ‘अट्टम’ का अर्थ है, ‘अभनिय’ अतैव ‘कुटयािट्टम’ का अर्थ ‘संयुक्त अभनिय’ होता है।
- इसमें शैलीबद्ध और संहताबिद्ध रंगमंचीय भाषा में नेत्र अभनिय (आँख की अभव्यिक्त) और हस्त अभनिय (इशारों की भाषा) प्रमुख हैं। इसमें मुख्य चरत्रि के वचिारों और भावनाओं पर ध्यान केंद्रति कयिा जाता है।
- पारंपरकि रूप से इसका अभ्यास कुट्टमपालम नामक सनिेमाघरों में कयिा जाता है, जो हदिू मंदरिों में स्थति होते हैं।
- कुटयािट्टम का प्रदर्शन पुरुष अभनिेताओं के समुदाय द्वारा कयिा जाता है जन्हिें ‘चक्यार’ कहा जाता है और महलिा कलाकारों को ‘नंगयािर’ कहा जाता है, इन्हें ‘नंबयिार’ नामक ढोलवादकों द्वारा संगीत दयिा जाता है।
- पाकरनट्टम, कुटयािट्टम का ही एक स्वरुप है जसिमें पुरुष और महलिा भूमकिाओं को भावनात्मकता के साथ प्रदर्शति कयिा जाता है। पुरुषों एवं महलिाओं का आपस में प्रतस्थािपन तथा एक ही समय में कई भूमकिाओं का व्याख्यान करना इस प्रकार के प्रदर्शनों के अंतर्गत एक चुनौतीपूर्ण कार्य माना जाता है।
- कुटयािट्टम में नंगयािर कुथु महलिा प्रदर्शन का एकल खंड है।
- कुटयािट्टम में संस्कृत भाषा के लगभग सभी प्रमुख नाटककारों के नाटक शामलि हैं, जनिमें भास, हर्ष, शक्तभिद्र, कुलशेखर, नीलकंठ, बोधायन और महेंद्रवक्रिमवर्मन शामलि हैं। लेकनि इसके अपवाद के तौर पर महाकवि कालदिास और भवभूति को भी शामलि कयिा गया हैं, जनिके नाटक पारंपरकि रूप से इस नृत्य कला के प्रदर्शनों का हस्सिा नहीं हैं।
- **कुटयािट्टम को यूनेस्को द्वारा मानवता की अमूर्त सांस्कृतकि वरिासत की प्रतनिधि सिूची (Representative List of the Intangible Cultural Heritage of Humanity) में शामलि कयिा गया है।**

वाशी पेपर/कागज़ (‘Washi’ Paper)

वाशी जापान में नर्मिति एक प्रकार का कागज़ है। वाशी शब्द जापानी भाषा के शब्द ‘वा’ से ज़लयिा गया है जसिका अर्थ है ‘जापानी’ और ‘शी’ जसिका अर्थ है ‘कागज’।

- इस हस्तनिर्मित कागज़ को वागामी के रूप में भी जाना जाता है और इसे तीन प्रमुख घटकों से बनाया गया है:
    - कोज़ो या 'शहतूत की छाल' (Kozo or 'mulberry bark)'
    - मित्सुमाता झाड़ियाँ (Mitsumata shrubs)
    - गम्पी ट्री (Gampi tree)
- इन तीन घटकों का उपयोग अकेले या उनकी विशिष्टता के लिये संयोजन में किया जाता है।
    - कोज़ो एक पर्णपाती वृक्ष है जो विश्व के कई हिस्सों में पाया जाता है, यह जापान में क्यूशू द्वीप और शिकोकू में बहुतायत से बढ़ता है। इसकी कठोरता कपड़े के सामान है और जलरोधी के तौर पर भी इसका इस्तेमाल किया जाता है।
    - मित्सुमता एक झाड़ी है यह मूलरूप से चीन का है और इसका उपयोग जापानी मुद्रा बनाने में किया जाता है। यह हाथीदांत के रंग की, महीन सतह वाली होती है और इसका इस्तेमाल छपाई में किया जाता है। इसका उपयोग मीजी काल (Meiji Period) में कागज़ के पैसे छापने के लिये किया जाता था।
    - गम्पी वृक्ष मूलतः जापान का ही है। सामान्यतः यह दुनिया के अन्य हिस्सों में नही पाया जाता। इसका उपयोग पुस्तकों और शिल्प के लिये किया जाता है।
- कभी-कभी कुछ अन्य रेशे जैसे अबका, रेयान, गेहूँ, चावल, बांस, गांजा, आदि को भी वाशी पेपर बनाने के लिये मिलाया जाता है।
- वाशी एक अत्यंत पतला पेपर/कागज है, जो कभी लेखन और पेंटिंग से लेकर लैंपशेड, छतरियों और स्लाइडिंग दरवाज़ों आदि के लिये उपयोग किया जाता था। लचीलेपन और टिकाऊपन जैसी विशेषताओं के कारण इसका उपयोग जापान में प्राचीन पत्रों और वृत्तचित्रों को संरक्षित करने के लिये किया जाता है।

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/prelims-facts-22-june-2019